भारतीय दर्शन एवं साहित्य के विकास में प्राकृत वाङ्मय का योगदान

The Contribution of Prakrit Literature for Development of Indian Philosophy & Literature

प्रधान सम्पादक
डॉ. प्रकाश पाण्डेय

सम्पादक
प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई
डॉ. धर्मेन्द्र जैन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानितविश्वविद्यालय)
जयपुर परिसर, जयपुर

Scanned with CamScanner

भारतीय दर्शन एवं साहित्य के विकास में प्राकृत वाङ्मय का योगदान

The Contribution of Prakrit Literature for The Development of Indian Philosophy & Literature

प्रधान सम्पादक

डॉ. प्रकाश पाण्डेय

सम्पादक

प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई

डॉ. धर्मेन्द्र जैन

सह-सम्पादक

डॉ. सुमत जैन

डॉ. पुलक गोयल

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(नैक द्वारा 'अ' श्रेणी-प्राप्त-मानित-विश्वविद्यालयः)

(भारतसर्वकारस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)

जयपुरपरिसरः, जयपुरम्

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-81-926664-7-1

✲ सम्पादकमण्डलम् ✲

डॉ. प्रकाशपाण्डेयः
प्रो. श्रीयांशकुमारसिंघई
प्रो. रामकुमारशर्मा
प्रो. कमलेशकुमारजैनः
डॉ. धर्मेन्द्रजैनः
डॉ. सुदर्शनमिश्रः
डॉ. सुमतजैनः
डॉ. पुलकगोयलः

✲ Editorial Board ✲

Dr. Prakash Pandey
Prof. Shriyansh Kumar Singhai
Prof. Ram Kumar Sharma
Prof. Kamlesh Kumar Jain
Dr. Dharmendra Jain
Dr. Sudarshan Mishra
Dr. Sumat Jain
Dr. Pulak Goyal

© प्रकाशकाधीनम्

मूल्यम् 600 रूप्यकाणि

संस्करणम्-प्रथमम् 2014 ईस्वीये
300 प्रतयः

टंकक एवं मुद्रक :
आइडियल कम्प्यूटर सेन्टर, जयपुर

© Under the Publisher

Price : Rs. 600/-

Edition : First 2014
300 Copies

Type Setting & Printer :
Ideal Computer Centre,
Jaipur

प्रकाशकः

प्राचार्यः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

जयपुरपरिसरः, त्रिवेणीनगरम्, जयपुरम्-18

Publisher

Principal

Rashtriya Sanskrit Sansthan

Jaipur Campus, Triveni Nagar, Jaipur-18

प्राकृत काव्यों में निहित दार्शनिक तत्त्व

सत्यनारायण भारद्वाज

भारतीय संस्कृति अध्यात्मपरक संस्कृति रही है। यहाँ के साहित्यकारों ने भी अध्यात्म को परिपुष्ट करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य की सभी विधाओं में दार्शनिक तत्त्व उजागर हुआ है।

दर्शन शब्द का अर्थ साधारणतया 'दृष्टि' अर्थात् बाह्य चक्षु से लगाया जाता है। किन्तु सर्वसाधारण लोग जहां दृष्टि का अर्थ बाह्य चक्षु से लगाते हैं वहीं विद्वान् विचारक इसका अर्थ आन्तरिक चक्षु से लगाते हैं। स्पष्टतया जब कभी भी हम किसी समस्या के समाधान के लिए सोचना प्रारम्भ करते हैं, वहीं से दर्शन प्रारम्भ हो जाता है।

प्राकृत भाषा में काव्य प्रणयन, उसके प्रादुर्भाव काल से ही होता आ रहा है। यह भाषा जनभाषा थी। अतः इसका साहित्य जनता का साहित्य है। कवि वाक्पति राज ने प्राकृत भाषा का महत्त्व इन शब्दों में व्यक्त किया है –

णवमत्थदंसणं संनिवेस सिसिराओ बन्धरिद्धीओ।
अविरलमिणमो आभुवणबन्धमिह णवर पययम्मि॥

प्राकृत भाषा में रचित महाकाव्य जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। चाहे सामाजिक पहलू हो या राजनैतिक, आर्थिक हो या आध्यात्मिक। अतः प्राकृत महाकाव्य में अनेक स्थानों पर दार्शनिक तत्वों का समावेश रचनाकारों ने किया है, जिसका एक प्रमुख कारण यह भी माना जा सकता है कि ये रचनाकार जीवन को आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करने में विश्वास रखने वाले थे।

प्राकृत भाषा में मुख्य रूप से चार महाकाव्य परिगणित होते हैं, उनमें से प्रथम महाकाव्य **समराइच्चकहा** में जैन दर्शन का प्रधान लक्ष्य आत्मा को सांसारिक मायाजाल से मुक्त कराकर, अनन्त सुख (मोक्ष) की प्राप्ति कराना है। इस ग्रन्थ में श्रमण और श्रमणाचार के अतिरिक्त कुछ दार्शनिक विचारों का भी विवेचन किया गया है, जिसके अन्तर्गत लोक-परलोक, जीव गति, कर्म गति आदि का विश्लेषण किया गया है। इनमें से कुछ तत्त्वों का वर्णन यहां प्रस्तुत है।

संसार गति – समराइच्चकहा में संसार गति को दारुण बताया गया है।[1] यहां इस संसार गति का हेतु

Scanned with CamScanner